Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

गायत्री परिवार के सप्त आंदोलन में प्रज्ञा संगीत की भूमिका

ASHOK KUMAR YADAV
Research Scholar, Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Gayatrikunj Santikunj, Haridwar, Uttrakhand

DR. SHIV NARAYAN PRASAD
Chairperson and Associate Professor, Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Gayatrikunj Santikunj, Haridwar, Uttrakhand

सारांश: *भारतवर्ष की सारी सभ्यताओं में संगीत का बड़ा महत्व रहा है। धार्मिक एवं सामाजिक परंपराओं में संगीत का प्रचलन प्राचीन काल से रहा है। इस रूप में, संगीत भारतीय संस्कृति की आत्मा मानी जाती है। वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं श्रीराम.शर्मा आचार्य जी ने देश, धर्म, समाज, संस्कृति, राष्ट्र एवं विश्व के उत्थान कल्याण के लिए/विशेष सात आन्दोलन का सफल संचालन किया इस प्रकार सभी सामाजिक समस्याओं के कारण समाज में विक्रितियाँ उत्पन्न हो रहा है। इसलिए समय रहते इन सभी समस्याओं का उचित समाधान किया जाना आवश्यक है। अतः पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने संगीत के माध्यम से सप्त आन्दोलन को आधार बनाकर मानव समाज को सही दिशा दिया।*

कुंजी शब्द: *गायत्री परिवार, सप्त आंदोलन, प्रज्ञा संगीत।*

भूमिका

मानव समाज कई प्रकार के विविधता से धिरा हुआ है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक धर्म, सम्प्रदायों के अपनी-अपनी अलग-अलग मतें है, इन्ही विविधता के कारण समाज में कुछ मूड़ मान्यताएँ प्रचलन आरंभ हो जाते हैं जिनसे समाज को लाभ के स्थान पर परेसानियों का सामना करना पड़ता है, यही मान्यताएँ लम्बे समय पस्चात कुरीतियों का रूप ले लेता है।

समाज के ऐसे गलत रूढ़ियों को जड़ से समाप्त करने का प्रयास अखिल विश्व गायत्री परिवार के माध्यम से किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र इन्ही विषयों को ध्यान में रखकर कार्य किया गया है।

गायत्री परिवार का परिचय

अखिल विश्व गायत्री परिवार पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा स्थापित संस्था है। इस संस्था ने विचार क्रान्ति अभियान, प्रज्ञा अभियान आदि चलाये, जिसका उद्देश्य जनमानस में वैचारिक परिवर्तन लाकर समाज का उत्थान करना है। हम बदलेंगें युग बदलेगा, हम सुधरेंगें-युग सुधरेगा, मनुष्य भटका हुआ देवता है आदि इनके प्रमुख उद्घोष है। इस संगठन का कार्य गायत्री मंत्र की मूल भावना (प्रज्ञा का परिष्कार) के अनुसार है।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख संस्थानों, प्रतिष्ठानों (जन्मभूमि आ वलखेड़ा-आगरा, अखण्ड ज्योति संस्थान-मथुरा, गायत्री तपोभूमि-मथुरा, शांतिकुंज, ब्रह्मवर्चस, देव संस्कृति विश्वविद्यालय -हरिद्वार) आदि के अतिरिक्त देश एवं विदेशो में फैले हजारों केन्द्र ऐसे हैं जिन्हें शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ, प्रज्ञामण्डल, ज्ञानमंदिर एवं ज्ञानकेन्द्र आदि के रूप में जाना जाता है। जहां से लोककल्याण की दिशा में अनगिनत कार्य सम्पन्न होते हैं। संसार में एक धर्म, एक संस्कृति, एक भाषा, एक शासन की स्थापना को महत्वपूर्ण मानकर कार्यक्रमों को आगे बढ़ाना, युग निर्माण योजना ने अपना ध्येय रखा है। इस योजना के संस्थापक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने ”सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः“ के लक्ष्य को अपना जीवन लक्ष्य माना तथा उन्होंने ”आत्मवत् सर्वभूतेषु एवं वसुधैव-कुटुम्बकम्“ के लिए ही अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया। उन्हीं के पद्चिन्हों पर चलने का प्रयास उनके अनुयायी सदैव करते रहते है।

प्रज्ञा संगीत का परिचय

प्रज्ञा संगीत का सूत्रपात वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी के द्वारा किया है। जिसका मुख्य केन्द्र शांतिकुंज, हरिद्वार है। जिस प्रकार प्राचीन-काल में भक्तिमार्ग के संतों (जैसे-मीराबाई, सूरदास, तुलसीदास, संत कबीर, चैतन्य महाप्रभु, एवं नरसी मेहता आदि) ने संगीत के माध्यम से समाज को एक नई प्रेरणा दिया, उसी परंपरा को आगे बढा़ते हुए युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने प्रज्ञा संगीत के

माध्यम से ”लोकरंजन से लोकमंगल“ की विधा का आरंभ किया। जिसके माध्यम से राष्ट्र एवं समाज में उत्पन्न कुरीतियों, बुराईयों का समाधान किया जा सके। क्योंकि संगीत ही एक ऐसा माध्यम है जिसके सहारे मनुष्य के मन, मस्तिष्क एवं हृदय को बदला जा सकता है।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने समाज एवं युग के समस्याओं के निवारण के लिए गीत/भजन आदि का निर्माण किया, जिसे आज प्रज्ञा संगीत के नाम से जाना जाता है।

प्रज्ञा संगीत की परिभाषा

वह संगीत जिनमें ईश्वर विश्वास, धर्म, आत्मा, श्रद्धा, सद्भावना, सेवा परमार्थ, विवेक, कर्त्तव्य पालन जैसे गुणों को उभारने वाले प्रेरणापरक गीत हो एवं जिसका सम्बोधन आत्मा को, परमात्मा को, विश्व मानव को, विश्वात्मा को जागृत करने के लिए किया जाए ऐसे संगीत को प्रज्ञा संगीत कहते है।[1]

सप्त आन्दोलन में प्रज्ञा संगीत की भूमिका

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने अपने पूज्य गुरूदेव स्वामी सर्वेश्वरानंद जी के मार्गदर्शन में देश, धर्म, समाज, संस्कृति, राष्ट्र एवं विश्व के उत्थान/कल्याण के लिए विशेष सात आन्दोलन का सफल संचालन किया, जिसे सप्त आन्दोलन के नाम से जाना गया।[2]

1. साधना आंदोलन -

साधना सभी आंदोलनों की धुरी है। युग निर्माण का शुभारंभ साधना से ही हुआ, सच्चा साधक सही अर्थों में आंदोलनकारी हो सकता है। बिना साधना के आन्दोलन में भाग लेने वाला थोड़ी कठिनाई आने पर फिसल जाता है, मार्ग से भटक जाता है और आंदोलन छोड़ बैठता है। अतः सभी आंदोलनों की सफलता साधना आंदोलन की सफलता पर निर्भर करती है। इसीलिए गायत्री परिवार के दैनिक दिनचर्या में साधना को विशेष स्थान दिया गया एवं साधना सत्रों में प्रज्ञागीत, संगीतमय साधना जैसे- नादयोग, ज्योति अवधारणा को रखा गया है।

पूज्य गुरूदेव जी ने गायत्री परिवार के समस्त सत्रों में साधना को विशेष महत्व दिया है। इस प्रकार समस्त साधना शिविरों में साधना एवं मानव जीवन की गरिमा से संदर्भित प्रज्ञागीतों को साधना काल के मध्य सुनाया जाता था। जैसे - चंद्रायण सत्र, कल्प साधना सत्र, संजीवनी साधना सत्र, अंतः उर्जा जागरण सत्र एवं वर्तमान में चलाये जाने वाले सभी सत्रों में साधना अनिवार्य है साथ ही षटचक्र जागरण हेतु विभिन्न रागों पर आधारित गायत्री मंत्र का सीड़ी तैयार किया गया। इन सभी संत्रों में प्रज्ञासंगीत का विषेश योगदान रहा है। इसीलिए गायत्री परिवार में प्रज्ञागीतों को विशेष महत्व दिया जाता है।[3]

साधना आंदोलन पर आधारित प्रज्ञा गीत -

कर रहे हैं साधना हम, शक्ति गुरूवर आप देना।

साधक का सविता को अर्पण, शिष्यों का गुरू को समर्पण।

2. स्वास्थ्य आंदोलन

मिशन के मूलभूत सिद्धांत ‘‘स्वास्थ्य शरीर, स्वस्थ मन, सभ्य समाज बनाएँगें‘‘ पर आधारित या आंदोलन प्रत्येक नागरिक को उन्हीं के संसाधनों के अंतर्गत स्वस्थ जीवन जीने के सूत्र प्रदान करेगा।

इस संदर्भ में आहार-विहार, रहन-सहन, सफाई-व्यायाम, निरापद जड़ी-बूटियों से उपचार, ऋतु पदार्थों का सेवन, मसाला-वाटिका आदि के लिए लोकशिक्षण में भावभरे प्रयास करने की आवश्यकता है, ताकि सर्वसाधारण को निरोग रहने के आधार समझने का अवसर मिले और

1 वांड्मय-65 पृष्ठ 430
2 प्रखर प्रज्ञा डायरी, पृष्ठ -06
3 गायत्री विद्या सेट ‘‘हमारे सात आंदोलन‘‘ पृष्ठ -1/4 वर्ष - 2010

बीमार पड़ने का संकट ही सामने न आए। इस संदर्भ में शरीर संरचना, संतुलित आहार, रोगी परिचर्या एवं वनौषधियों संबंधी सभी आवश्यक जानकारी जानना आवश्यक है।

हमें क्या करना होगा ?

- स्वस्थ रहने के लिए सात्विक और परिश्रम की कमाई का ही भोजन ग्रहण करें।
- मांसाहार को त्यागकर शाकाहार को अपना आहार बनाएँ।
- प्रकृति के साथ सर्वदा सहयोग करें अर्थात प्राकृतिक नियमों का पालन करें।
- व्यायाम को जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बनाएँ।
- ऋतु के अनुसार ही पदार्थों का सेवन करें।
- शारीरिक सफाई के साथ स्थान तथा गाँवों की सफाई का भी ध्यान रखें।
- बीमार पड़ने पर जड़ी-बूटी का ही सेवन करें, क्योंकि वे हानिरहित होती है।
- मानसिक स्वच्छता के लिए नियमित स्वाध्याय तथा श्रेष्ठ चिंतन का अभ्यास डालें।
- ‘‘जल्दी सोएँ-जल्दी जागें।‘‘ यही स्वस्थ जीवन का आधार है।
- ‘‘व्यस्त रहें-मस्त रहें‘‘ के सिद्धांत को जीवन में व्यवहारिक रूप से उतारे।

इन सभी नियमों का स्वयं तो पालन करें कि साथ में अपने-अपने क्षेत्र में इन सभी को व्यवहारिक रूप से पालन करने के लिए प्रयत्नशील रहें, तभी हम परम पूज्य गुरुदेव के सपनों का युग निर्माण कर सकेंगे। गायत्री परिवार द्वारा स्वास्थ आन्दोलन पर कार्यशाला, संगोष्ठी, गंगा स्वछता एवं तरूमित्र अभियान जैसे कई कार्यक्रम संचालित किया जाता है जिसमें प्रज्ञागीतों के माध्यम से समाज को प्रेरित किया जाता है।[1]

स्वास्थ्य आंदोलन पर आधारित प्रज्ञा गीत -

स्वस्थ शरीर स्वच्छ मन अपना, सभ्य समाज बनायेंगे।

करना होगा सारे जग को, इसका ही गुणगान। जगत में आयुर्वेद महान।।

स्वास्थ्य देव हे श्री धन्वन्तरि, पग वन्दन कर लो स्वीकार।

3. शिक्षा आंदोलन

स्वतंत्र भारत की आधी शताब्दी निकल जाने के बाद आज भी अशिक्षा अपनी जड़ें जमाए बैठी है, जो प्रगति की गाँव की बेड़ी बनी हुई है। शिक्षा के अभाव में अशिक्षित का जीवन बोझिल बना हुआ है। वस्तुतः अशिक्षा जीवन का अभिशाप है।

अशिक्षा के इस कलंक को कैसे मिटाया जाए ? हम ऐसे व्यक्तियों पर विचार करें, जो अपने भरण-पोषण और रोजी-रोटी के लिए किसी छोटे-बड़े काम में लगे हैं, पर अशिक्षित हैं। इन कामकाजी लोगों की शिक्षा कैसे हो ? इन्हें क्या पढ़ाया जाए ? कब पढ़ाया जाए ? कितना बढ़ाया जाए ? कि ये अपनी रोजी-रोटी के साथ-साथ पढ़ भी लें और अपने काम में कोई कठिनाई भी अनुभव ना करें। जहाँ तक इनकी पढ़ाई का प्रश्न है, यह पढ़ाई ऐसी हो कि ये अपने छोटे-छोटे कामों के लिए किसी दूसरे पर निर्भर न रहें, बल्कि आत्मविश्वास के साथ सफलतापूर्वक सम्मानजनक जीवन जी सकें।

1 गायत्री विद्या सेट ‘‘हमारे सात आंदोलन‘‘ पृष्ठ -5/8 वर्ष - 2010

शिक्षा आंदोलन द्वारा निम्न कार्य किए जा सकते हैं-

- हिंदी अथवा क्षेत्रीय भाषा की वर्णमाला के वर्णों को पढ़ाना।
- विद्युत के उपकरणों का रिपेयरिंग करना।
- लकड़ी के खिड़की, दरवाजे, फर्नीचर आदि निर्माण करना।
- पत्र, पोस्टर बनाना, प्रिंटिंग प्रेस चलाना, बेत की कुर्सी बनाना, सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, आदि बनाना।
- पंखा, सिलाई मशीन, आयरन, गैस-स्टो आदि सुधारना।
- कपड़े उद्योग, हथकरघा उद्योग के माध्यम से कपड़ों का निर्माण करना।
- खादी के कपड़ों का निर्माण करना।

यदि इस प्रकार का व्यवहारिक ज्ञान दिया जाए, जो अशिक्षा का कलंक तो मिलेगा ही साथ ही व्यक्ति में आत्मविश्वास जगेगा और उसकी रूचि स्वावलंबन की ओर बढ़ेगी।[1]

शिक्षा आंदोलन पर आधारित प्रज्ञा गीत -

- सही रूप उभरेगा उस दिन, मानव के उत्थान का।
- ऋषियों के तप त्याग तेज गुण, मानव धर्म महान की।

4. स्वावलंबन आंदोलन

किसी भी देश की खुशहाली स्वावलंबी नागरिकों पर टिकी होती है। हमारा राष्ट्र गाँव प्रधान, कृषि प्रधान है। यहाँ आर्थिक क्रांति आएगी, तो गाँव को केंद्रित कर बनाई गई योजनाओं द्वारा ही आएगी। ग्रामोद्योग हमारी अर्थशक्ति का आधार बनेंगे, तो ग्रामीण संस्कृति भी फलती-फूलती रहेगी, विकसित होती रहेगी। शहरीकरण जो आज का सबसे बड़ी विभीषिका लाने वाला कारण बन गया है, उसे भी ‘‘गाँव की ओर वापस लौटो‘‘ अभियान को सार्थक बनाकर, कम किया जा सकेगा। अतः आवश्यकता ऐसा आर्थिक तंत्र खड़ा करने की है, ताकि गाँव स्वावलंबी व आकर्षक बन सके। वहाँ का हर निवासी अपने भविष्य के लिए आशान्वित व आष्वस्त हो सके। जो, जहाँ जिस स्थिति में रह रहा है, वहीं उसके लिए स्वावलंबन की व्यवस्था बने। यह चुनौती है आज प्रतिभाओं के लिए।[2]

स्वावलंबन पर आधारित प्रज्ञा गीत -

ग्रामतीर्थ विकसित करने का, शुरू करें अभियान।
जिससे सुखी रहे हर मानव, बनें सभी गुणवान ॥[3]

5. पर्यावरण आंदोलन

प्रगति का यह आवरण जिसमें हम रहते हैं तथा निरंतर गतिशील बने रहते हैं, उसे पर्यावरण कहते हैं। इसके विभिन्न अंगों-मृदा, जल, वायु, प्रकाश, ताप, वनस्पति एवं जीव-जंतुओं के आंतरिक संबंधों का संतुलन पर्यावरण संतुलन कहलाता है। प्रकृति के इस संतुलन का अपनी स्थिति में बने रहना, वनस्पतियों, जीवों, प्राणियों तथा मानव के अस्तित्व के लिए आवश्यक है, परंतु मनुष्य ने अपनी भोगवादी जीवनशैली व साधन बढ़ाने के प्रयासों में विकास के नाम पर प्रकृति का अनियंत्रित दोहन कर उसकी श्रृंखला की अनेक कड़ियों को तोड़ डाला है। ईश्वर

1 गायत्री विद्या सेट ‘‘हमारे सात आंदोलन‘‘ पृष्ठ -9/13 वर्ष - 2010
2 गायत्री विद्या सेट ‘‘हमारे सात आंदोलन‘‘ पृष्ठ -14/18, वर्ष - 2010
3 गीत संजीवनी - 151

ने मनुष्य को जो भूमि, जल, वायु, आकाश, नदियाँ पहाड, विशाल हरे-भरे वन, वन्य जीवन निःशुल्क व पूर्णतः निर्दोष दिए थे, उनका स्वरूप बिगाड़कर रख दिया है। विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों के कारण सांस लेने के लिए शुद्ध हवा, पीने के लिए शुद्ध जल एवं खाने के लिए शुद्ध खाद्य मिलना दूभर हो गया है। अनियंत्रित उद्योगों एवं वाहनों से निकलते धुएँ एवं घटते जंगलों के कारण जहाँ एक ओर वातावरण का ताप बढ़ रहा है, ओजोन परत नष्ट हो रही है। वहीं प्रकृति में भारी असंतुलन पैदा हो गया है। समझदार मनुष्य की नासमझी ने अपने अस्तित्व को ही दाँव पर लगा दिया है। प्रकृति मनुष्य की सहचर उसकी पोशक, उसको धारण करने वाली, उसकी माँ, उसकी जीवनदायिनी है। इसीलिए महान विज्ञानवेत्ता ऑइंस्टीन ने चेतावनी देते हुए कहा था कि वैज्ञानिक विकास तो ठीक है, पर उसे प्रकृति विरोधी नहीं होना चाहिए।

अतः यदि मनुष्य को जब आगे अपना अस्तित्व बचाना है, तो प्रकृति से दोस्ती करनी होगी। उसका दोहन नहीं, पोषण करना होगा। उन तरीकों को खोजना वह व्यवहार में लाना होगा, जिनसे प्रकृति को संतुलित किया जा सके।[1]

पर्यावरण आंदोलन पर आधारित प्रज्ञा गीत-

- पर्यावरण बचाओ, धरती चिल्ला रही हमारी।
- फिर अपने गाँवों को - हम स्वर्ग बनायेंगे।

6. नारी जागरण आंदोलन

भावी पीढ़ी का नए युग का स्तर ऊँचा उठाना हो, तो यह नोट करना चाहिए कि नारी को प्रगतिशील बनाए बिना, अन्य कितने हो साधन जुटा लेने पर भी अभीष्ट प्रयोजन की सिद्धि न हो सकेगी। सुविकसित व सुसंस्कृत नारी के सहयोग व नेतृत्व से ही भरे-पूरे परिवार का स्वप्न साकार किया जा सकता है। अतः नारी स्वच्छंदता के बजाए नारी शक्ति जागरण की ओर ध्यान दिया जाए-यही गायत्री परिवार की अवधारणा है। उपेक्षा और पिछड़ेपन ने नारी की क्षमता और उमंग को कुंठित करके रख दिया है।

हमारे देश में तो एक पुरुष के लिए एक नारी की श्रमशक्ति खप जाती है। सारे दिन रोटी-बच्चों में ही लगी रहती है। न तो वह अपनी योग्यता बढ़ा सकती हैं और न उसके श्रम का ही उपयोग हो पाता है। परिवार और समाज की आर्थिक प्रगति के लिए नारी का सुयोग्य और समुन्नत होना आवश्यक है। अतः बराबर के सहयोगी के रुप में उसका विकसित होना आवश्यक है। अतः गायत्री परिवार द्वारा नारी जागरण के कार्यक्रमों में प्रज्ञागीत का विशेष योगदान रहता है।[2]

नारीजागरण आंदोलन पर आधारित प्रज्ञा गीत-

- देवियां देश की जाग जायें अगर।
- दुनिया आगे बढ़ती जाए, रहे क्यों पीछे नारी रे।

7. व्यसनमुक्ति, कुरीति उन्मूलन आंदोलन

मनुष्य आज अशिक्षा एवं अज्ञान के कारण कुरीति के जाल में फंसकर अपना यौवन एवं स्वास्थ्य खो रहा है। जिसके कारण तम्बाकू, गुटखा, शराब, धुम्रपान, अफिम, भांग, चरस, गांजा जैसे कुरीतियों के चंगुल में फंसकर समाज में अनहोनी के कार्य कर रहा है।

गायत्री परिवार द्वारा- गाँजा, भाँग, चरस, मार्फिन, हशीश, एल.एस.डी., स्मैक, ब्राउन शुगर जैसे नशों के विरुद्ध आंदोलन चल रहा है। इसके अतिरिक्त मांसभक्षण, जुआ, चोरी, बेईमानी, भ्रष्टाचार आलस्य, अशिष्टता, स्वार्थपरता, अपव्यय, द्वेष, दुर्भाव, कलह, शोषण, अनाचार, अवांछनीयताएँ भ्रांतियां जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ तथा जेवर, बड़ी दावतें, जूठन छोड़ना, भूतपलीत, भाग्यवाद, बाल-विवाह, अनमेल विवाह,

---

1 गायत्री विद्या सेट ''हमारे सात आंदोलन'' पृष्ठ -19/23 वर्ष - 2010

2 गायत्री विद्या सेट ''हमारे सात आंदोलन'' पृष्ठ -24/27 वर्ष - 2010

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

छूआ-छूत, परदाप्रथा, पशुबलि, भिक्षावृत्ति आदि कुरीतियों को दूर करने का आंदोलन चल रहा है। इन सभी आन्दोलन के सफल संचालन में प्रज्ञागीतों का विशेष योगदान रहता है।

कुरीति उन्मूलन आंदोलन पर आधारित प्रज्ञा गीत-

नशा न करना मान लो कहना, प्यारे भाई बहना

होगी बड़ी खराबी, होगी बड़ी खराबी ॥

ओ राष्ट्र के सपूतों युवकों जरा विचारो

दुश्मन है द्रव्य मादक, इस देश को उबारो ॥

नशे आदमी को कर देते, हैं बिल्कुल बेहाल॥[1]

निष्कर्ष

भारतवर्ष की सारी सभ्यताओं में संगीत का बड़ा महत्व रहा है। धार्मिक एवं सामाजिक परंपराओं में संगीत का प्रचलन प्राचीन काल से रहा है। इस रूप में, संगीत भारतीय संस्कृति की आत्मा मानी जाती है। वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने देश, धर्म, समाज, संस्कृति, राष्ट्र एवं विश्व के उत्थान/कल्याण के लिए विशेष सात आन्दोलन का सफल संचालन किया इस प्रकार सभी सामाजिक समस्याओं के कारण समाज में विक्रितियाँ उत्पन्न हो रहा है। इसलिए समय रहते इन सभी समस्याओं का उचित समाधान किया जाना आवश्यक है। अतः पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने संगीत के माध्यम से सप्त आन्दोलन को आधार बनाकर मानव समाज को सही दिशा दिया।

संदर्भ

1. श्रीराम शर्मा आचार्य, ‘‘वाड्मय-65‘‘ अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा 1998, पृष्ठ - 430
2. आचार्य श्रीराम शर्मा,‘‘प्रखर प्रज्ञा डायरी‘‘ प्रकाशन- युगनिर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, मथुरा, पृष्ठ -06, वर्ष- 2012
3. गायत्री विद्या सेट ‘‘हमारे सात आंदोलन‘‘ पृष्ठ -1/4 वर्ष- 2010
4. गायत्री विद्या सेट ‘‘हमारे सात आंदोलन‘‘ पृष्ठ -5/8 वर्ष- 2010
5. गायत्री विद्या सेट ‘‘हमारे सात आंदोलन‘‘ पृष्ठ -9/13 वर्ष- 2010
6. गायत्री विद्या सेट ‘‘हमारे सात आंदोलन‘‘ पृष्ठ -14/18, वर्ष- 2010
7. पण्डया डॉ.प्रण्डव ’’गीत संजीवनी‘‘ वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शांतिकुंज हरिद्वार, पृष्ठ – 151 वर्ष - 2010
8. गायत्री विद्या सेट ‘‘हमारे सात आंदोलन‘‘ पृष्ठ -19/23 वर्ष- 2010
9. गायत्री विद्या सेट ‘‘हमारे सात आंदोलन‘‘ पृष्ठ -24/27 वर्ष- 2010
10. पण्डया डॉ.प्रण्डव ’’गीत संजीवनी‘‘ वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शांतिकुंज हरिद्वार, पृष्ठ – 255 वर्ष – 2010
11. https://hi.wikipedia.org/wiki/

1 गीत संजीवनी, पृष्ठ - 255